

भारत के महान् योद्धा, दिल्ली के अन्तिम हिंदू सम्राट्

महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य

एक विस्मृत अग्रदूत

गुंजन अग्रवाल



॥ नामूलं लिख्यते किञ्चित् ॥

प्रकाशन-विभाग

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना

नयी दिल्ली-110 055

'MAHĀRAJĀ HEMACANDRA VIKRAMĀDITYA
EKA VISMRTA AGRADŪTA'
by Gunjan Aggrawala

Published by:
PUBLICATIONS DEPARTMENT
Akhila Bhāratiya Itihāsa Saṅkalana Yojanā
Baba Sahib Apte Smriti Bhawan, 'Keshav Kunj',
Jhandewalan, New Delhi-110 055
Ph.: 011-23675667
e-mail : abisy84@gmail.com
Visit us at : www.itihassankalan.org

© Copyright : Publisher
First Edition : Kaliyugābda 5116, i.e. 2014 CE
Laser Typesetting & Cover Design by:
Mukesh Upadhyay
Printed at: Graphic World, 1659 Dakhni Sarai Street,
Daryaganj, New Delhi-110055
Price: ₹ 50/-
(माधव संस्कृति न्यास द्वारा वित्तपोषित)

ISBN : 978-93-82424-13-0

प्रकाशक :

प्रकाशन-विभाग

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे-स्मृति भवन, 'केशव-कुंज',
झण्डेवाला, नयी दिल्ली-110 055

दूरभाष : 011-23675667

ई-मेल : abisy84@gmail.com

वेबसाइट : www.itihassankalan.org

© सर्वाधिकार : प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण : कलियुगाब्द 5116, सन् 2014 ई०

लेज़र-टाईपसेटिंग एवं आवरण-सज्जा :

मुकेश उपाध्याय

मुद्रक : ग्राफिक वर्ल्ड, 1659, दखनी सराय स्ट्रीट,
दरियागंज, नयी दिल्ली-110 002

समर्पण

मध्यकालीन भारत के महान् वीरों को



भूमिका

निः सन्देह सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य भारत के अन्तिम हिंदू-सम्राट्, एक अत्यन्त श्रेष्ठ प्रशासक, एक अद्भुत प्रतिभाशाली सैनिक, एक महान् राजनीतिज्ञ तथा एक सफल कूटनीतिज्ञ थे। वे अपने विचारों, जीवनादर्शों तथा दूरदृष्टि से भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने को आतुर थे। उनका एक ऐसा व्यक्तित्व था जिसने भारत के भविष्य को बदलने का अथक प्रयास किया था। वे पृथ्वीराज चौहान के सही अनुगामी थे, जिन्होंने देश की स्वाधीनता के लिए युद्धक्षेत्र में अपना बलिदान दिया। साथ ही वे देश के श्रेष्ठतम वीरों— महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी तथा गुरु गोविन्द सिंह की परम्परा से थे। हेमचन्द्र एक अत्यन्त साधारण परिवार में जन्मे थे, तत्कालीन भारत में उनके अतिरिक्त एक भी हिंदू ऐसा नहीं था, जो शासन के सर्वोच्च पद— सुल्तान का मुख्य सलाहकार तथा प्रधान सेनापति बना हो।

सामान्यतः मुसलमान चाटुकार दरबारी लेखकों, ब्रिटिश इतिहासकारों तथा वर्तमान तथाकथित सेक्युलरवादियों, प्रगतिशील लेखकों तथा वामपंथी इतिहासकारों ने हेमचन्द्र के कार्यों को इतिहास में समुचित स्थान नहीं दिया है। मुसलमान लेखकों में मतांधता तथा स्वार्थवश यह प्रवृत्ति रही कि वे युद्ध में किसी

मुस्लिम के मारे जाने पर उसके 'शहीद' होने या 'बहिस्त' में जाने का राग अलापते तथा किसी हिंदू के मारे जाने पर उसे 'जहन्नुम' जाने या 'दोजख' भेजने का फतवा देते थे। मुसलमान शासक के युद्ध में भागने पर कहते थे कि 'यह ज्ञात नहीं कौन जीता' और मुस्लिम शासक के बुरी तरह परास्त होने पर इतिहास के प्रसंगों को ही गायब कर देते थे। ब्रिटिश इतिहासकार भारत में परस्पर अलगाव पैदा करने तथा हिंदुओं में हीन भावना पैदा करने में और भारतीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष करनेवाले व्यक्ति के चरित्र को विवादास्पद बनाने में दक्ष थे। छद्मवेशी सेक्युलरवादी तथा वामपंथी इतिहासकार भारत पर विदेशी आक्रमणकारियों का केवल पक्ष ही नहीं लेते हैं, अपितु तथ्यों से छेड़खानी करके, प्रमाणों को तोड़-मरोड़कर, मनमानी व्याख्या तथा निष्कर्ष निकालते हैं। सम्राट् हेमचन्द्र का जीवन भी उनकी दृष्टि में इसका अपवाद न था। वे अकबर को 'राष्ट्रवादी' तथा मुगलों के शासन को 'शानदार युग' कहते कभी नहीं थकते हैं।

प्रस्तुत इस लघु ग्रन्थ के लेखक प्रबुद्ध चिन्तक श्री गुंजन अग्रवाल ने तथ्यों के आधार पर सम्राट् हेमचन्द्र को सही रूप में 'एक महान् विजेता' कहा है, जिन्होंने हिंदुओं के अतिरिक्त अफगानों तथा तुर्कों की विशाल सेना का संचालन किया था। हेमचन्द्र की गणना उन गिने-चुने सेनापतियों में की जा सकती है, जिन्होंने 24 में से 22 लड़ाइयों में अद्भुत सफलता प्राप्त की थी। उनकी सभी विजयों में तीव्रता से आगरा तथा दिल्ली की विजय किसी चमत्कार से कम न थी। दिल्ली में मुगल-सूबेदार तार्दी बेग खान उनसे बुरी तरह परास्त हुआ। उसके समस्त मुगल-खेमे में घबराहट तथा भय व्याप्त हो गया। बैरम खान, जो अकबर का संरक्षक था, ने तुरन्त एक विशाल सेना अपने सर्वश्रेष्ठ सेनापति मीर मोहम्मद शेरवानी के नेतृत्व में भेजी। इस घबराहट एवं निराशा के वातावरण में अनेक मुस्लिम अमीरों ने अकबर को भारत छोड़कर काबुल जाने की सलाह दी। दिल्ली में तुगलकाबाद के संघर्ष में कई हजार मुगल-सैनिक मारे गये, तार्दी बेग ने किसी तरह भागकर जान बचायी।

यह उल्लेखनीय है कि अकबरकालीन मुगल-इतिहासकारों— अबुल फजल तथा बदायूनी— दोनों हेमचन्द्र के घोर विरोधी थे तथा उनसे घृणा करते थे। उन्होंने हेमचन्द्र के चरित्र को कालिमायुक्त करने में कोई कसर न रखी थी। परन्तु दोनों ने हेमचन्द्र की विजयों की बड़ी प्रशंसा की है। इससे उत्कृष्ट उदाहरण भी क्या हो सकता है कि घोर विरोधी शत्रु भी, उसकी वीरता की प्रशंसा करते नहीं थके !

इसी भाँति 07 अक्टूबर, 1556 ई० को हेमचन्द्र का दिल्ली के ऐतिहासिक

पुराने क़िले में राज्याभिषेक, विश्व-इतिहास की एक अनुपम तथा महान् घटना थी। यह भारत में मुगल-साम्राज्य के पतन की विधिवत् घोषणा थी। दिल्ली के इस क़िले में सभी अफगान तथा तुर्क और राजपूत सेनापतियों की उपस्थिति में पूर्ण हिंदू धार्मिक पद्धति से हेमचन्द्र का राज्याभिषेक किया गया था। इस अवसर पर हेमचन्द्र ने 'विक्रमादित्य' अथवा 'विक्रमाजीत' की उपाधि धारण की थी। अपने नाम के सिक्के प्रचलित किये। साथ ही सेना का पुनर्गठन, व्यापार-वाणिज्य में सुधार, अनेक भ्रष्ट अधिकारियों का पदच्युतिकरण तथा गोरक्षा करने की घोषणा ही नहीं की, अपितु सम्पूर्ण राज्य में तत्काल गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। यद्यपि महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य का दिल्ली पर आधिपत्य केवल 29 दिनों तक रहा, तथापि यह भारतीय इतिहास की एक अत्यन्त गरिमामय और ऐतिहासिक घटना थी। यह कई शताब्दियों के पश्चात् भारत में हिंदू-साम्राज्य का दिवस था। विश्व प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० आर०सी० मजूमदार ने इसे 'मुस्लिम शासनकाल में भारतीय इतिहास की एक द्वितीय घटना' ('A unique episode in the history of India during the Muslim rule') बताया है। सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य ने गत 350 वर्षों (1206-1556 ई०) के बाद भारत में विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने तथा भारत में पुनः स्वदेशी राज्य की स्थापना करने के लिए अत्यन्त साहस का परिचय दिया था।

संक्षेप में सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य के संघर्षों की स्वर्णिम गाथा का यदि कोई भी इतिहासकार निष्पक्ष विवेचन तथा विश्लेषण करेगा, तो निश्चय ही वह हेमचन्द्र विक्रमादित्य को देश की स्वाधीनता के लिए, परकीय सत्ता को अस्वीकार करनेवाले, महानतम शासकों की सूची में रखेगा, इतिहास में श्रेष्ठ स्थान देगा। सही बात तो यह है कि किसी भी शासक के कार्यों का मूल्यांकन उसके द्वारा राष्ट्रीय जीवन-मूल्यों के लिए किए गए विशिष्ट प्रयत्नों से आँका जाना चाहिए, न कि उसकी जय-पराजय से।

इस दृष्टि से प्रबुद्ध विद्वान् श्री गुंजन अग्रवाल ने प्रस्तुत लघु ग्रन्थ में सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य के व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व का सही विश्लेषण किया है। इसमें सम्राट् हेमचन्द्र की देशभक्ति, राष्ट्रप्रेम तथा उसके अंतर्निहित मानवीय गुणों का सुन्दर विवेचन किया है। सम्राट् हेमचन्द्र के जीवन पर लिखे प्रायः सभी जीवन-चरित्रों में प्रस्तुत पुस्तक एक उत्कृष्ट कृति है। यह भारतीय इतिहास की श्रेष्ठ वीर-परम्परा को उद्घाटित करती है तथा भारतीयों में स्वाभिमान, आत्मविश्वास

तथा आत्मगौरव की भावना का संचार करती है। श्री गुंजन ने इस लघु ग्रन्थ में प्रायः सभी तत्कालीन मुस्लिम लेखकों तथा उत्तरकालीन प्रमुख इतिहासकारों के समीक्षात्मक विचारों का मन्थन कर, अपने अथक परिश्रम तथा प्रतिभा से प्रत्येक प्रसंग का सजीव तथा तथ्यात्मक वर्णन किया है। निःसन्देह यह इतिहास-जगत् में एक स्वागत योग्य ग्रन्थ है, यह राष्ट्र को बहुमूल्य उपहार है। इसके लिए श्री गुंजन सभी के बधाई के पात्र हैं। पुस्तक में दुर्लभ चित्रों को देकर उन्होंने विस्तृत प्रसंगों को उभारा ही नहीं, अपितु सही तथ्यों का दिग्दर्शन कराया है। लेखक ने पुस्तक के अन्त में सन्दर्भ-ग्रन्थों की एक विस्तृत सूची दी है जो आगामी शोधकर्ताओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

निःसन्देह श्री गुंजन अग्रवाल का यह प्रयास सराहनीय है। निश्चय ही प्रबुद्ध पाठक इसका स्वागत करेंगे तथा देश की युवा पीढ़ी इससे प्रेरणा प्राप्त करेगी।

—सतीश चन्द्र मित्तल

प्राक्कथन

महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य, भारतीय इतिहास के गगन में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति भास्वर हैं। किन्तु दुर्भाग्य का विषय है कि भारतीय इतिहास के यह महान् योद्धा इतिहास के पृष्ठों से अदृश्य हैं। समकालीन मुस्लिम-इतिहासकारों ने उनका उल्लेख नाममात्र का किया और किया भी तो विद्वेषवश; हिंदू इतिहासकार भी उदासीन रहे। दूसरी ओर स्वाधीनता-पश्चात् तैयार हुए इतिहास-ग्रन्थों और पाठ्य-पुस्तकों में भी महाराजा हेमचन्द्र का उल्लेख न के बराबर ही मिलता है। इतना ही नहीं, महाराजा हेमचन्द्र का दिल्ली या हरियाणा में कहीं कोई उल्लेखनीय स्मारक या उनके नाम पर देश में कहीं कोई सड़क तक नहीं है। रेवाड़ी में उनकी जो हवेली है, वह भी जर्जर अवस्था में है। इससे शर्मनाक बात और क्या होगी कि बॉलीवुड की फ़िल्म 'जोधा-अकबर' में अकबर को महान् और महाराजा हेमचन्द्र को खलनायक की तरह दिखाया गया है।

हर्ष का विषय है कि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना ने महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य को इतिहास के पृष्ठों में पुनर्स्थापित करने के कार्य को एक प्रकल्प के रूप में लिया और इसपर एक बड़ा आयोजन और एक पुस्तक का प्रकाशन करने जा रही है। मैंने अपने बाल्यकाल में महाराजा हेमचन्द्र के विषय में थोड़ा-बहुत पढ़ा था और वे बातें स्मरण भी थीं। अब उनके विषय में लिखना था। और यह एक जटिल कार्य था। सर्वप्रथम महाराजा हेमचन्द्र से सन्दर्भित ग्रन्थों की खोज शुरू की। पहले लेख और शोध-प्रबन्ध मिलते गए और फिर उनसे ग्रन्थों (प्राथमिक स्रोतों) की सूचना मिलती गयी। सरस्वती में प्रकाशित श्री अगरचन्द नाहटा के एक पुराने लेख से अत्यन्त उपयोगी सूचनाएँ मिलीं। देश के लब्धप्रतिष्ठ

ऐतिहासिक उपन्यासकार और पटना में मेरे अभिभावकतुल्य डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद जी ने महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य पर अपना प्रख्यात उपन्यास 'हेमचन्द्र विक्रमादित्य' ही भेज दिया। उन्हें धन्यवाद देकर मैं उनके योगदान को विस्मृत नहीं कर सकता। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार होने पर अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष और विश्वप्रसिद्ध इतिहासकार प्रो० सतीश चन्द्र जी मित्तल ने भूमिका-लेखन के मेरे अनुरोध को तत्काल स्वीकार कर किया, और यह मैं उनका मुझपर अनन्य प्रेम ही मानता हूँ। उनको मेरा कोटिशः धन्यवाद और प्रणाम निवेदन!

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय संगठन-सचिव मा० बालमुकुन्द जी पाण्डेय ने पुस्तक के संबंध में मेरे निवेदन को सहर्ष स्वीकार ही नहीं किया, अपितु पाण्डुलिपि को प्रकाशन हेतु सहमति भी दी और इसके लिए मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैंने इस लघु पुस्तिका में महाराजा हेमचन्द्र के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का यथासम्भव तथ्यपरक वर्णन करने का प्रयास किया है। आशा है, यह पुस्तिका आपको रुचिकर लगेगी। पुस्तक के संबंध में सुझावों का स्वागत किया जायेगा।

शारदीय नवरात्रारम्भ, कलियुगाब्द 5116
(25 सितम्बर, 2014 ईसवी)

—गुंजन अग्रवाल

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन,
'केशव कुञ्ज', झण्डेवाला,
नयी दिल्ली-110 055

विषय-सूची

भूमिका	iv
प्राक्कथन	viii
महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य : एक विस्मृत अग्रदूत	1
परिशिष्ट : दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के हिंदू-शासक : 736-1556 ई०	32
आधार ग्रन्थ-सूची (महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य पर कुछ प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत-सामग्री)	34

भारत के महान् योद्धा, दिल्ली के अन्तिम हिंदू सम्राट्

महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य

एक विस्मृत अग्रदूत

विषय-प्रवेश

महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य, भारतीय इतिहास के विस्मृत उन चुनिन्दा लोगों में परिगणित हैं जिन्होंने इतिहास की धारा मोड़कर रख दी थी। हिंदू-सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य, पृथिवीराज चौहान (1179-1192) के बाद इस्लामी शासनकाल के मध्य सम्भवतः दिल्ली के एकमात्र या अन्तिम हिंदू-सम्राट् हुए। वह विद्युत की भाँति चमके और देदीप्यमान हुए। उन्होंने अलवर (राजस्थान) के बिल्कुल साधारण-से घर में जन्म लेकर एक व्यापारी, माप-तौल अधिकारी, 'दरोगा-ए-डाक चौकी', 'वज़ीर' (प्रधानमंत्री) और सेनापति होते हुए दिल्ली के तख्त पर राज किया और अपने अपार पराक्रम एवं बाइस युद्धों में विजयी रहकर 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। यह वह समय था जब मुग़ल एवं अफगान— दोनों ही दिल्ली पर राज्य के लिए संघर्षरत थे। यद्यपि हेमचन्द्र अधिक समय तक शासन न कर सके, तथापि इसे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना अवश्य कहा जायेगा।¹ हेमचन्द्र की तूफ़ानी विजयों के कारण कई इतिहासकारों ने उनको 'मध्यकालीन भारत का नेपोलियन' कहा है।

प्रसिद्ध इतिहासकार श्री भगवतशरण उपाध्याय (1910-1982) ने लिखा है, 'यशोवर्मन के प्रायः हजार वर्ष पश्चात् विदेशियों को बहिर्गत करने का एक प्रयास

1. 'विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज', अगरचन्द नाहटा, सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 14

और हुआ। वह था रेवाड़ी (हरियाणा का गुड़गाँव ज़िले) के भृगुवंशीय हेमचन्द्र का प्रयास। सोलहवीं शती ईसवी के मध्य में हेमचन्द्र को मुसलमान लेखकों ने 'हेमू' नाम से लिखा है, शायद इसी कारण कि वे उसकी राजनैतिक और सामरिक योग्यता से चिढ़े हुए थे। वे राजपूतों को छोड़ हिंदुओं में किसी और वर्ण को सामरिक श्रेय देने को तैयार न थे। आधुनिक भार्गव लोग हेमचन्द्र को अपना पूर्वज मानते और अपने को ब्राह्मण कहते हैं। इनका गोत्र निस्सन्देह भृगु का है और ये ब्राह्मण हो सकते हैं, यद्यपि पाणिनि के सूत्र 'विद्यायोनिसंबंधौ' के अनुसार गुरु और पिता— दोनों के नाम पर गोत्र बन सकते थे। मुसलमानों ने हेमचन्द्र को, जो 'बकाल' (बनिया) लिखा है, उसका कारण सम्भवतः उनका वैमनस्य था। यह सम्भव है कि आज ही की भाँति चूँकि भार्गव व्यापार करने लगे थे, मुसलमानों को उनके बनिया होने का भ्रम हो गया हो।'^{1,2,3,4,5}

1. भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, भगवतशरण उपाध्याय, वाणी प्रकाशन, 2009, पृ० 154
2. सन् 1944 में गुजरात के सुप्रसिद्ध कथाकार जयभिक्षू ने 'दिल्लीश्वर : विक्रमादित्य हेमू' नामक अपने गुजराती उपन्यास में हेमचन्द्र को मंडोवर के जैन-श्रावक का पुत्र और जौनपुर की पाठशाला में शेरशाह का सहपाठी तथा कालान्तर में दिल्ली का एक जौहरी और अन्त में एक जैन यति की प्रेरणा से महान् योद्धा और दिल्लीश्वर के रूप में चित्रित किया है।
3. राहुल सांकृत्यायन (1893-1963) ने 'हेमचन्द्र विक्रमादित्य' शीर्षक अपने एक लेख में हेमचन्द्र को सहसराम (सासाराम, बिहार) के रोनियार वंश का बतलाया है।
—सरस्वती, मई 1956, पृ० 309-313
4. डॉ० दशरथ शर्मा (1903-1976) ने लिखा है कि हेमू के धर्म के विषय में मुसलमान इतिहासकार मौन हैं। किन्तु बहुत सम्भव है कि वह जैन रहा हो। रेवाड़ी के आस-पास के भार्गव (प्राचीन दोसर) 'हेमू दिवस' मनाते हैं। बीकानेर में जनरल जयदेव सिंह जी कुमेदानजी, डॉ० शंकरलाल आदि दूसरे हैं। हेमू जाति के दूसरे वर्णिक थे— इसमें कोई सन्देह नहीं है। अब दूसरे अपने को 'भार्गव ब्राह्मण' कहने लगे हैं। काँग्रेसी-नेता गोपीचन्द भार्गव, ठाकुरदास भार्गव वास्तव में दूसरे हैं। यह जाति हर वर्ष रेवाड़ी में 'हेमू दिवस' मनाती है।... पर वास्तव में दूसरे वैश्य ही थे और अब भी कई दूसरे अपने को वैश्य ही मानते हैं।
—'विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज', सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 14, 17
5. सल्तनतकालीन इतिहासकार ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन अहमद (1551-1621) ने लिखा है : 'हेमू मेवात के परगने में रेवाड़ी के कस्बे में एक बकाल (बनिया) था। बाद में वह बाज़ार का दरोगा और सेना का महानिदेशक बन गया। फिर वह और भी ऊँचा बढ़ गया और सुल्तान अदली का मुख्य सलाहकार हो गया।' —'तबकात-ए-अकबरी', भारत का इतिहास, खण्ड 5, इलियट एण्ड डाउसन, अनुवादक : डॉ० मथुरालाल शर्मा, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा, 1969, पृ० 195

जन्म तथा प्रारम्भिक जीवन

हेमचन्द्र, राय जयपाल के पौत्र और राय पूरणदास (पूरणमल) के पुत्र थे। इनका जन्म आश्विन शुक्ल विजयदशमी, मंगलवार, कलियुगाब्द 4603, वि०सं० 1556, तदनुसार 02 अक्टूबर, 1501 ई० को अलवर (राजस्थान) ज़िले के मछेरी नामक गाँव में हुआ था। पूरणदास पहले पौरोहित्य कार्य करते थे, किन्तु बाद में मुग़लों के द्वारा पुरोहितों को परेशान किए जाने के कारण कुतुबपुर, रेवाड़ी में आकर व्यवसाय करने लगे।

हेमचन्द्र की शिक्षा रेवाड़ी में आरम्भ हुई। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी, अरबी तथा गणित के अतिरिक्त घुड़सवारी में भी महारत हासिल की। साथ ही पिता के नये व्यवसाय में अपना योगदान देना शुरू कर दिया। अल्पायु से ही हेमचन्द्र, शेरशाह सूरी (1540-1545) के लश्कर को अनाज एवं बन्दूक चलाने में प्रयोग होनेवाले प्रमुख तत्त्व पोर्टेशियम नाइट्रेट अर्थात् शोरा की आपूर्ति कराने के व्यवसाय में पिताजी के साथ हो लिए थे। इसी बारूद के प्रयोग के बल पर शेरशाह सूरी ने हुमायूँ (1531-1540 एवं 1555-1556) को 17 मई, 1540 ई० को कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हराकर काबुल लौट जाने पर विवश कर दिया था। हेमचन्द्र ने उसी समय रेवाड़ी में धातु से विभिन्न तरह के हथियार बनाने के काम की नींव रखी, जो आज भी वहाँ पीतल, ताँबा, इस्पात के बर्तन आदि बनाने के काम के रूप में जारी है।

दिनांक 22 मई, 1545 ई० को शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र ज़लाल ख़ाँ ने इस्लामशाह सूरी के नाम से गद्दी सम्भाली और 1545 से 1554 तक दिल्ली पर शासन किया। पंजाब से बंगाल तक फैले हुए राज्य में अनेक अफगान-सरदारों ने मौके का लाभ उठाकर बगावत करनी चाही, लेकिन इस्लामशाह ने सबको पराजित कर दिया। उसने यह भी महसूस किया कि शासन की सुव्यवस्था के लिए हिंदू-कर्मचारियों और सैनिकों की सहायता लेना आवश्यक हो गया है। अतः उसने अपनी सेना में कई राजपूतों, जाटों आदि को भर्ती किया। प्रशासनिक कामकाज के लिए भी उसने कई हिंदू-कर्मचारियों की नियुक्ति की। ऐसे समय दिल्ली के एक प्रभावशाली सरकारी व्यापारी ने इस्लामशाह को हेमचन्द्र के बारे में बताया और उसे हेमचन्द्र को महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्य सौंपने की सलाह दी। इस्लामशाह ने व्यापारी की सिफ़ारिश पर हेमचन्द्र को दिल्ली का बाज़ार-अधीक्षक नियुक्त किया। थोड़े ही समय में उनकी पदोन्नति करके उनको खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का

अधीक्षक बना दिया।¹ हेमचन्द्र ने अपनी योग्यता सिद्ध की और इस्लामशाह के विश्वासपात्र बन गये। हेमचन्द्र बड़े सचचरित्र और योग्य पुरुष थे। इस्लामशाह उनसे हर मसले पर राय लेने लगा, हेमचन्द्र के काम से प्रसन्न होकर उसने हेमचन्द्र को 'दरोगा-ए-डाक चौकी' (chief of intelligence) के महत्वपूर्ण पद पर आसीन कर दिया।²

हेमचन्द्र ने इस पदभार का दायित्व अत्यन्त कुशलता, दूरदर्शिता एवं कर्तव्यपरायणता से निभाया। इस्लामशाह के अन्य सभी प्रमुख पदाधिकारी एवं सैन्य अधिकारी अफगान थे। उन सबके बीच अपनी प्रतिष्ठा का सिक्का जमाने में हेमचन्द्र आश्चर्यजनक रूप से सफल रहे। सैन्य गतिविधियों, प्रशासन और जनसामान्य के बीच एक अविच्छिन्न सम्पर्क-सेतु बनाकर वह आम नागरिक से लेकर सुल्तान तक की प्रशंसा के पात्र बन गये।³ अनेक अफगान-सरदारों की अनिच्छा के बावजूद इस्लामशाह ने हेमचन्द्र को छः हज़ार सवारों की मुख्तियारी दी और 'अमीर' का खिताब दिया।⁴

दिनांक 22 नवम्बर, 1554 को ग्वालियर में अपनी मृत्यु से पूर्व इस्लामशाह ने पंजाब से हेमचन्द्र को बुलाकर उनको दिल्ली की सैनिक और प्रशासनिक व्यवस्था सौंप दी।⁵ इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसका बारह-वर्षीय पुत्र फ़िरोज़शाह सूरी गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही महीने शासन कर सका। 1554 में ही उसे शेरशाह के भतीजे मुहम्मद मुबारिज़ ख़ान ने मौत के घाट उतार दिया और स्वयं आदिलशाह सूरी के नाम से 1554 से 1555 तक शासन किया। आदिलशाह एक घोर विलासी और लम्पट शासक था और शासन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था। फलस्वरूप अनेक अफगान-अधिकारियों ने उसके विरुद्ध बगावत शुरू कर दी। विद्रोह को दबाने और राजस्व-वसूली के लिए आदिलशाह ने हेमचन्द्र को ग्वालियर के क़िले में न केवल अपना 'वज़ीर' (प्रधानमंत्री) बनाया, वरन् अफगान-सेना का सेनापति भी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार हेमचन्द्र पर शासन का भार डालकर

1. सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य : 5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष (2001-2002), सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य दूसरा (भार्गव) मेमोरियल चेरिटेबल ट्रस्ट, पृ० 6-7

2. वही, पृ० 7

3. वही, पृ० 7

4. वही, पृ० 8

5. वही, पृ० 8

आदिलशाह ने चुनार (मिर्जापुर के पास) की राह पकड़ी। इस प्रकार सम्पूर्ण अफगान-शासन हेमचन्द्र के हाथ में आ गया। अवसर पाकर हेमचन्द्र ने हिंदू-राज्य का स्वप्न देखा।¹

शासन की बागडोर हाथ में आते ही हेमचन्द्र ने कर न चुकानेवाले विद्रोही अफगान-सरदारों को बुरी तरह कुचलकर रख दिया। इब्राहिम खान, सुल्तान मुहम्मद खान, ताज करानी, रख खान नूरानी-जैसे अनेक प्रबल विद्रोहियों को युद्ध में परास्त किया और एक-एक करके सभी को मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार हेमचन्द्र ने अपने सारे प्रतिद्वन्द्वियों को क्रमशः पराजितकर शान्त कर दिया। यद्यपि हेमचन्द्र का जन्म ब्राह्मण-कुल में हुआ और उनका पालन-पोषण भी पूरे धर्मिक तरीके से हुआ, तथापि वह सभी धर्मों को समान मानते थे, इसीलिए उनकी सेना के अफगान-अधिकारी भी उनका पूरा सम्मान करते थे और इसलिए भी क्योंकि वह एक कुशल सेनानायक सिद्ध हो चुके थे।

हुमायूँ, जो पहले 1540 ई० में शेरशाह सूरी द्वारा हराकर काबुल खदेड़ दिया गया था, ने दुबारा हमला करके शेरशाह सूरी के भाई सिकन्दर सूरी को पंजाब में हराकर जुलाई, 1555 ई० में दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उस समय अफगान सरदार आपस में ही संघर्षरत थे। उत्तर भारत, मध्य भारत, बिहार और बंगाल तक उन्होंने अपने झण्डे बुलन्द कर दिये। आदिलशाह के सबसे बड़े शत्रु इब्राहिम खान ने कालपी में सिर उठा लिया था। तब आदिलशाह ने हेमचन्द्र को बड़ी सेना और पाँच सौ हाथी तथा तोपखाना देकर आगरा और दिल्ली की ओर भेजा। जब हेमचन्द्र कालपी पहुँचे, तब उन्होंने निश्चय कर लिया कि पहले इब्राहिम को समाप्त किया जाए। इसलिए उन्होंने शीघ्रता से उसकी ओर कूच किया। एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें हेमचन्द्र विजयी हुए और इब्राहिम भागकर बयाना चला गया। हेमचन्द्र ने उनका पीछा किया और बयाना को घेर लिया। यह घेरा तीन महीने तक चलता रहा।² तभी हेमचन्द्र को आदिलशाह का आदेश प्राप्त हुआ कि बंगाल के सूबेदार मोहम्मद खान गोरिया (1545-1555) ने विद्रोह कर दिया है। तब हेमचन्द्र ने बंगाल की ओर कूच किया और आगरा से पन्द्रह कोस की दूरी पर छप्परघाट नामक गाँव के निकट मोहम्मद खान गोरिया से युद्ध किया, जिसमें मोहम्मद मारा गया।³ इसके बाद

1. भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, पृ० 154-155

2. तबकात-ए-अकबरी, भारत का इतिहास, खण्ड 5, इलियट एण्ड डाउसन, पृ० 197-198

3. वही, पृ० 198

हेमचन्द्र ने बंगाल में अपने सूबेदार शाहबाज़ खान को नियुक्त किया। इसके लगभग छः महीने बाद (27 जनवरी, 1556 ई०) हुमायूँ की दिल्ली में मृत्यु हो गयी। हुमायूँ की मौत का समाचार सुनकर हेमचन्द्र ने समझ लिया कि अब हिंदू-राज्य के अपने स्वप्न को साकार करने का समय आ गया है।^{1,2,3}

हेमचन्द्र ने मुगल-साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के लिए दिल्ली की ओर कूच किया। अफगान-साम्राज्य की पुनर्स्थापना का लोभ दिखाकर उन्होंने अफगान-सरदारों को मुगलों से न मिलने दिया, उनसे उन्हें भड़का रखा। ग्वालियर से निकलकर रास्ते में बंगाल, बिहार, पूर्वी उत्तरप्रदेश एवं मध्यप्रदेश की कई रियासतों

1. सर विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ ने लिखा है, 'हेमू, जिसने अपने सुल्तान अदली (या आदिलशाह/मुबारिज़ खान) के लिए दिल्ली और आगरे पर विजय प्राप्त की, विचार करने लगा कि अब उसकी प्रभुसत्ता की घोषणा का समय आ गया है। अब एक बड़ी सेना और (यौद्धिक) हाथी उसके अधीन हैं। और, अब यह श्रेयस्कर होगा कि वह स्वयं अपना राज्य स्थापित करे, बजाय इसके कि वह अपने अनुपस्थित स्वामी के लिए निरन्तर युद्ध करता जाये।' ('Hemu, who had won Delhi and Agra in the name of his master Adali, now began to reflect that his sovereign was a long way off, that he himself was in possession of the army and elephants, and that it might be better to gain a kingdom for his own benefit rather than for that of his absent employer. Accordingly, he distributed the spoil, excepting the elephants, among the Afghans who accompanied him, and thus won them over to his side.')

—Akbar the great Mogul 1542-1605, Oxford, 1917, pp.36-37.

2. प्रख्यात इतिहासकार जे०सी० पॉवेल-प्राइस (J.C. Powell-Price) ने लिखा है : 'मुगलों का दिल्ली, आगरा और सम्भल पर अधिकार था, लेकिन हेमू ने एक बड़ी सेना एकत्र की और दिल्ली पर सूर-वंश का शासन फिर से स्थापित करने के लिए चल पड़ा। हेमू, जो रेवाड़ी का बनिया था, एक सैनिक और प्रशासक के रूप में काफी प्रसिद्ध हो चुका था। पर वह दिल्ली सूर-वंश के लिए नहीं, अपितु अपने लिए विजय करना चाहता था।'

—A history of India, Published by : UK Thomas Nelson and Sons Ltd., London, 1955, p. 244.

3. विनायक दामोदर सावरकर (1883-1966) ने लिखा है : '...उन दिनों हुमायूँ द्वारा परास्त सूरी घराने का अन्तिम बादशाह मुहम्मदशाह आदिल वायव्य दिशा की ओर भाग गया था। किन्तु जिस पुरुषार्थी हिंदू-वज़ीर को हाथों उसने राजसत्ता सौंपी थी, वह हेमू इस अवसर का लाभ उठाने के लिए दिल्ली प्रदेश में ही डेरा डाले हुए था।'

—भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ, खण्ड 3, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, पृ० 120

को उन्होंने विजित किया। आगरे का मुगल-सूबेदार इस्कंदर खान उज़बेक, हेमचन्द्र से युद्ध किए बिना ही मैदान छोड़ दिल्ली की ओर भाग खड़ा हुआ। इस प्रकार हेमचन्द्र ने आसानी से आगरे पर अधिकार कर लिया। इस तरह 1553-56 के मध्य हेमचन्द्र ने आदिलशाह के वज़ीर और सेनापति के रूप में पंजाब से बंगाल तक 22 युद्ध जीते।¹ हेमचन्द्र का इटावा, कालपी और आगरा प्रान्तों पर अधिकार हो गया। ग्वालियर में उन्होंने हिंदुओं की भर्ती से अपनी सेना मज़बूत कर ली।

दिल्ली पर विजय और राज्यारोहण

दिनांक 06 अक्टूबर, 1556 ई० को हेमचन्द्र ने अपने सभी सेनाधिकारियों, अनेक पठान योद्धाओं, चालीस हज़ार घुड़सवारों, 51 बड़ी तोपों और 500 छोटी तोपों के साथ दिल्ली के कुतुब मीनार से पाँच मील दूर तुगलकाबाद में अपना डेरा जमाया। दिल्ली के सूबेदार तार्दी बेग खान ने हेमचन्द्र का मुक़ाबला करने का प्रयास किया, लेकिन अन्त में अपनी जान बचाकर युद्धस्थल से भाग खड़ा हुआ। इस युद्ध में लगभग 3 हज़ार मुगलों का सफ़ाया कर दिया गया। इस विजय से हेमचन्द्र के पास काफी धन, 1,000 अरबी घोड़े, लगभग 1,500 हाथी तथा एक विशाल सेना एकत्र हो गई थी। उन्होंने अफगान सेना की कुछ टुकड़ियों को प्रचुर धन देकर अपनी ओर कर लिया। अगले दिन (दिनांक 07 अक्टूबर, 1556 ई०, तदनुसार आश्विन कृष्ण दशमी, रविवार, कलियुगाब्द 4658, वि० सं० 1613) दिल्ली के पुराने क़िले में अफगान और हिंदू-सेनानायकों के सान्निध्य में पूर्ण हिंदू धार्मिक विधि से उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने प्राचीन काल के अनेक हिंदू-राजाओं की भाँति 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। अपने कौशल, साहस और पराक्रम के बल पर हेमचन्द्र अब 'हेमचन्द्र विक्रमादित्य' के नाम से देश की शासन-सत्ता के सर्वोच्च शिखर पर आसीन थे। मुस्लिम शासन के लगभग 364 वर्ष बाद, पहली बार, कम समय के लिए ही सही, दिल्ली पर हिंदू-शासन स्थापित हुआ। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव ने लिखा है : '350 वर्षों (1206-1556) के विदेशी शासन को देश से उखाड़ फेंकने और दिल्ली में स्वदेशी शासन को पुनः स्थापित करनेवाले हेमू के साहसपूर्ण प्रयत्न की जितनी प्रशंसा की जाए, थोड़ी है।'² प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ०

सतीश चन्द्र मित्तल (जन्म : 1938 ई०) ने लिखा है : 'निस्सन्देह यह भारतीय इतिहास का स्वर्ण-दिवस था, जब एक विदेशी आक्रान्ता द्वारा स्थापित, परकीय सत्ता को उखाड़कर भारत में पुनः स्वकीय शासन स्थापित किया गया।' स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर ने लिखा है : 'हेमू जन्मतः हिंदू था। सुल्तान के शासनकाल में वह अपने पराक्रम से ऊपर चढ़ते-चढ़ते उच्चतम अधिकार के पद पर पहुँच गया, अपने हिंदू-धर्म को तनिक भी आँच न लाते हुए हिंदू के रूप में ही उसने उस दुर्बल सुल्तान की वज़ीरी पायी और सारी बादशाहत मुट्ठी में कर ली थी। किन्तु अब तो उसने खुलेआम हिंदुत्व का झण्डा फहरा दिया। सारी मुस्लिम सुल्तानशाही को मिटाकर हिंदू-साम्राज्य खड़ा कर दिया! फलतः कट्टर मुस्लिम जगत् में एक ही चिल्लाहट मच गयी कि "तोबा, तोबा ! इस्लामी सल्तनत डूब गयी और खालिस काफिरशाही आ गयी !"²

इस अवसर पर हेमचन्द्र ने अपने नामवाले सिक्के जारी किए, सेना का प्रभावी पुनर्गठन किया और बिना किसी अफगान-सेनानायक को हटाए हिंदू-अधिकारियों को नियुक्त किया। उन्होंने अपने छोटे भाई जुझार राय को अजमेर का सूबेदार बनाकर भेज दिया तथा अपने भाँजे रमैया (रामचन्द्र राय) और भतीजे महीपाल राय को सेना में शामिल कर लिया।³ अबुल फज़ल (1551-1602) के अनुसार हेमू काबुल पर हमले की तैयारी कर रहा था और उसने अपनी सेना में कई बदलाव किये।

पानीपत का द्वितीय युद्ध (05 नवम्बर, 1556 ई०)

जिस समय हुमायूँ की मृत्यु हुई (27 जनवरी, 1556 ई०), उस समय उसका पुत्र अकबर (1556-1605) 14 वर्ष का बालक मात्र था। पानीपत के युद्ध से पूर्व अकबर के कई सेनापति उसे हेमचन्द्र से युद्ध करने के लिए मना कर चुके थे तथापि अकबर के संरक्षक बैरम खान (1501-1561) ने अकबर को दिल्ली पर नियन्त्रण के लिए हेमचन्द्र से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। दिनांक 05 नवम्बर, 1556 ई० (कार्तिक कृष्ण नवमी, रविवार, कलियुगाब्द 4658, वि० सं० 1613 तदनुसार 2 मोहर्म्म, 964

1. डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव के अनुसार हेमचन्द्र ने अपने जीवन में 24 युद्ध लड़े, जिसमें 22 में उसने सफलता प्राप्त की थी। — भारत का इतिहास, पृ० 482
2. वही, पृ० 485

1. राष्ट्रीय चेतना के प्रकाश में भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नयी दिल्ली, 2013, पृ० 113
2. भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ, खण्ड 3, पृ० 121
3. सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य : 5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष (2001-2002), पृ० 11

हिज़री) को युद्ध प्रारम्भ हुआ। इतिहास में यह युद्ध 'पानीपत के द्वितीय युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है। भय और सुरक्षा के विचार से अकबर और बैरम खान ने स्वयं इस युद्ध में भाग नहीं लिया और वे दोनों युद्धक्षेत्र से 8 मील दूर, सौधापुर गाँव के शिविर में रहे, किन्तु हेमचन्द्र ने स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व किया।

भगवतशरण उपाध्याय ने लिखा है : 'यद्यपि (मुग़ल-सेना के) जीतने की आशा नहीं के बराबर थी और अकबर को काबुल भाग जाने की सलाह दी जाने लगी थी, फिर सामना हेमू का था जिसके नाम से मुग़लों के देवता कूच कर जाते थे और जिसकी हरावल में बलिया, आरा के उन भोजपुरी वीरों की बहुतायत थी, जिन्होंने कुछ ही सालों पहले शेरशाह के संचालन में बाबर के लड़ाकों के पैर उखाड़ दिए थे, उनके बादशाह हुमायूँ को दर-ब-दर फिरने को मज़बूर किया था और राजपूताना की वीर-प्रसविनी भूमि को रौंद डाला था।'¹

सम्राट हेमचन्द्र की सेना में कुल 1 लाख सैनिक थे, जिसमें 30,000 राजपूत तथा शेष अफगान पैदल तथा अश्वारोही थे। इसी के साथ ही लगभग 1,500 हाथी थे, जिनपर सवार योद्धा धनुर्धारी तथा बन्दूकधारी थे। हाथी भी सुरक्षाकवच धारण किए हुए थे। इसके विपरीत मुग़ल-सेना में कुल 20,000 अश्वारोही सैनिक ही थे।²

हेमचन्द्र ने रास्ते से अपनी हरावल (अग्रिम टुकड़ी) को मुबारक खाँ और बहादुर खाँ के नेतृत्व में अपने तोपखाने की अधिकांश टुकड़ी के साथ मुग़ल-सेना का सामना करने के लिए पानीपत भेजा। अकबर की सेना की अग्रिम टुकड़ी का नेतृत्व अली कुली खान शायबानी ने किया। इस आरम्भिक मुठभेड़ में अकबर की सेना ने हेमचन्द्र की इस टुकड़ी को कूटनीतिक चालों एवं साहसिक योजना के द्वारा पराजित कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप हेमचन्द्र के सैनिक अपनी तोपों को छोड़कर मैदान से भाग गये।³ तोपों के हाथ से निकल जाने से हेमचन्द्र को बहुत अधिक क्षति पहुँची। तब हेमचन्द्र अपने हाथियों के साथ आगे बढ़े और उन्होंने ऐसी दृढ़ता से मुग़ल-सेना पर आक्रमण किया कि मुग़ल-सेना का बायाँ पक्ष हिल उठा।⁴ कुल

1. भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, पृ० 155

2. संसार के प्रसिद्ध युद्ध, सुरेन्द्र कुमार, प्रभात प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ० 81

3. वही, पृ० 81

4. अबुल फजल ने लिखा है कि हेमू ने अपनी सेना को तीन भागों में विभक्त किया था। मध्य भाग का नेतृत्व वह स्वयं कर रहा था। इसमें पाँच सौ हाथी और बीस हज़ार अफगान और

मिलाकर मुग़ल-सेना दहशत में थी और हेमचन्द्र की विजय निश्चित थी। स्वयं हेमचन्द्र 'हवाई' नामक एक विशाल हाथी पर सवार होकर सेना का संचालन कर रहे थे। इसी समय हेमचन्द्र की सेना के दायें भाग का नेतृत्व कर रहे शाही खाँ काकर तथा सहयोगी भगवानदास युद्ध में काम आ गये जिससे सम्राट को भारी धक्का लगा।¹ परन्तु तभी ऐसी घटना घटी जिसने युद्ध का चित्र बदलकर रख दिया। हेमचन्द्र अपने हाथी पर खड़े जो तीरों की मार कर रहे थे, स्वयं शत्रुओं की अनेक तीरों के निशाने पर थे। अब तक उन्हें अनेक घाव लग चुके थे। सहसा एक तीर उनकी आँख में आ लगा, दूसरा उनके हाथी की आँख में।^{2,3,4,5,6,7,8} इस परिस्थिति में भी सम्राट हेमचन्द्र ने

राजपूत थे। — अकबरनामा, भाग 2

1. संसार के प्रसिद्ध युद्ध, पृ० 82

2. भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण, पृ० 155

3. श्री विश्वास पाटील (जन्म : 1959 ई०) ने लिखा है : 'हेमू जब विजय के बहुत निकट आ गया था, उसे एक जहरीला साँप डस गया। वह हाथी के हौदे से नीचे गिर पड़ा। उसे मरा जानकर उसकी सेना में भगदड़ मच गयी। सेना भाग खड़ी हुई। हेमू नाहक मारा गया।'

— पानीपत (ऐतिहासिक उपन्यास), पृ० 409, भारतीय ज्ञानपीठ, 1991

4. शंकर बाम ने लिखा है, '... फिर उसी (पानीपत के) मैदान में दो ही पीढ़ी बाद हेमू (हेमचन्द्र विक्रमादित्य) ने उसके (बाबर के) पोते अकबर और उसके सरपरस्त बैरम खान से मुग़लों की सल्तनत छीन लेने की कोशिश की थी। यह युद्ध हेमू लगभग जीत चुका था कि उसकी आँख में कोई चीज ऐसी आकर लगी कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। नेताविहीन सेना तितर-बितर हो गयी। परिणामस्वरूप मुग़ल-शासन की नींव पक्की हो गयी।'

— यमुना की कहानी, पृ० 18, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

5. निज़ामुद्दीन अहमद ने लिखा है : 'एक बाण हेमू की आँख में घुस गया और उसके सिर के पीछे से निकल गया। जब उसके नीचे लड़नेवालों ने उसकी यह दशा देखी तो उनके हाथ संज्ञाशून्य हो गये और वे तितर-बितर हो गये। शाही सेना ने उनका पीछा किया और उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।'

— 'तबकात-ए-अकबरी', भारत का इतिहास, खण्ड 5, पृ० 206

6. जे०सी० पॉवेल-प्राइस ने लिखा है : 'हेमू 1 लाख सैनिक और 1,500 हाथी लेकर आगे बढ़ा। उसके विरुद्ध अली कुली खाँ के नेतृत्व में केवल 20 हज़ार मुग़ल थे और बैरम खाँ और अकबर सेना की पृष्ठभूमि में थे। आरम्भ में अधिक संख्या का पलड़ा भारी रहा और पानीपत के मैदान में मुग़लों की कतारें छिन्न-भिन्न हो गयीं। जब हेमू ने अपने हाथियों को मुग़लों की बीच की कतार में प्रविष्ट कराया तो कुछ समय के लिए ऐसा विदित हुआ कि मानो हेमू जीत जायेगा। इसका निर्णय तोपों ने तो नहीं, बल्कि एक चोट ने किया जो उसकी आँख में लगा और उसे फोड़कर सिर के पीछे जा निकला। महावत तुरन्त घायल और बेहोश सेनापति को



महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य के राज्यारोहण का चित्र (हेमचन्द्र भार्गव (चाँदनी चौक, दिल्ली) द्वारा नागपुर एफ०ए०एल० वर्क्स, सीताबर्डी, नागपुर से प्रकाशित)



पानीपत संग्रहालय (पानीपत-132103, हरियाणा) में सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य के राज्यारोहण का चित्र



तुगलकाबाद (दिल्ली) का क़िला जहाँ हेमचन्द्र ने अकबर की सेना को परास्त करके उत्तर भारत पर अपना राज्य स्थापित किया



कुतुबपुर (रेवाड़ी) में सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य की हेवली



दिल्ली का पुराना क़िला, जहाँ हेमचन्द्र का राज्यारोहण हुआ और उन्होंने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की



ग्वालियर का क़िला, जहाँ हेमचन्द्र को सन् 1553 में वज़ीर (प्रधानमंत्री) और सेनापति के पद पर नियुक्त किया गया और जहाँ से उन्होंने सन् 1556 में अकबर शासित आगरा व दिल्ली पर आक्रमण किया



सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य के पिता राय पूर्णदास जी



दूसर भागवों और हेमचन्द्र विक्रमादित्य के सैनिकों के कटे सिरों से बनाई गई मीनार का मुग़लकालीन चित्र (पानीपत संग्रहालय में प्रदर्शित)



मिर्जापुर के समीप चुनार का क़िला, जिसे हेमचन्द्र ने सन् 1553 में जीता और पूर्वी भारत का शासन करने में इसका उपयोग किया



कुतुबपुर (रेवाड़ी) में सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य की हेवली



पानीपत नगर के मुख्य चौराहे पर स्थापित
सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य की प्रतिमा

वीरता का परिचय देते हुए तीर निकालकर एक साफे के द्वारा आँख पर पट्टी बाँध

युद्ध के मैदान से बाहर ले गया और यह उसकी सेना के पलायन के लिए संकेत था ।'

—A history of India, p.246

7. सर विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ ने लिखा है : '05 नवम्बर, 1556 को हेमू को (पानीपत के द्वितीय युद्ध में) शत्रुपक्ष के दाएँ और बाएँ भाग को ध्वस्त करके उनमें संग्राम की स्थिति पैदा करने में सफलता मिली। उसने शत्रुपक्ष के मध्य में खान ज़मन के नेतृत्व में लड़नेवाले सैनिकों को अपने पहाड़-सरीखे हाथियों के द्वारा घेरकर अपनी विजय का निर्णायक क्षण लगभग प्राप्त कर लिया था। सम्भवतः उसकी विजय हो जाती, लेकिन दुर्घटनावश तभी उसकी आँख में एक तीर लगा जो उसके सिर के आर-पार हो गया और वह चेतनाशून्य हो गया। एक भारतीय सेना अपने अधिपति के अभाव में कभी संगठित नहीं रह सकती, जिसके जीवन पर वह पूरी तरह आश्रित होती है। हेमू के सैनिक (अपने स्वामी को चेतनाहीन समझकर) विभिन्न दिशाओं में बिखर गए और उन्होंने शत्रुपक्ष के आक्रमण को रोकने का कोई प्रयास नहीं किया।' ('On November 5 Hemu succeeded in throwing both the right and the left wings of his opponents into confusion, and sought to make his victory decisive by bringing all his 'mountain-like elephants' to bear on the centre of the enemy, commanded by Khan Zaman. Probably he would have won but for the accident that he was struck in the eye by an arrow which pierced his brain and rendered him unconscious. An Indian army never could survive the loss of its leader, on whose life its pay depended. Hemu's soldiers at once scattered in various directions and made no further attempt at resistance.')

—Akbar the great Mogul 1542-1605, pp.38-39.

8. डॉ० रमेश चन्द्र मजूमदार ने लिखा है : 'वी०ए० स्मिथ ने 'दुर्घटना' शब्द का उचित प्रयोग किया है, और निस्सन्देह यह मात्र एक 'दुर्घटना' ही थी जिसने हेमू को विजयश्री, राजसिंहासन और जीवन से वंचित कर दिया। जबकि स्मिथ का विचार है कि हेमू की विजय के बहुत अच्छे अवसर थे, सर वोल्सेले हेग ज़ोर देकर कहते हैं कि 'मुग़ल-सेना निश्चिततः रौंद दी जाती, यदि हेमू की आँख में तीर न लगा होता।... अतः यह कहना युक्तिसंगत होगा कि हेमू की असफलता का सबसे बड़ा कारण वह अनजाना और अदृश्य तत्त्व है जिसे भाग्य या नियति कहते हैं, जो मनुष्यमात्र के जीवन में निर्मम भूमिका निभाता है।' ('V.A. Smith rightly uses the word 'accident'—and it is undoubtedly a more accident that deprived Hemu of victory, throne and life. While Smith thinks that Hemu had every chance of winning the battle. Sir Wolseley Haig asserts that the Mughul forces "would certainly have been overpowered had not Hemu's eye been pierced by an arrow.... It may, therefore, be reasonably held, that Hemu's failure was, in a great measure, due to that unknown nad unknowable factor, called fate or destiny, which plays no inconsiderable part in the affairs of men.')

—'Himu— A Forgotten Hindu Hero', *The History and Culture of the Indian People*, Vol. VII, 1984, p.101.

ली और युद्ध जारी रखा। किन्तु घाव गहरा होने के कारण वह मूर्च्छित होकर हौदे में गिर पड़े। जैसे ही हेमचन्द्र के गिरने की सूचना उनके सैनिकों के मिली, वैसे ही वे बुरी तरह भयभीत होकर युद्धक्षेत्र से भाग खड़े हुए। इस प्रकार अकबर को एक निर्णयात्मक सफलता प्राप्त हो गयी।'

सल्लतनतकालीन इतिहासकार ख्वाज़ा निज़ामुद्दीन अहमद (1551-1621) ने लिखा है : जब हेमू हौदे में गिर पड़ा और उसका महावत भी मारा गया तो हेमू का हाथी जंगल की ओर भाग गया। तब ऐसा हुआ कि शाह कुली ख़ाँ को वह हाथी मिल गया और उसने अपना महावत उसपर चढ़ा दिया। तब महावत ने देखा कि हौदे में एक आदमी मरा हुआ पड़ा है और जब उसे भली-भाँति देखा गया तो सिद्ध हुआ कि वह स्वयं हेमू है। शाह कुली ख़ाँ समझ गया कि उसको एक महत्वपूर्ण वस्तु मिली है। उसने हाथी चलाया और उन अनेक लोगों के साथ, जो रणभूमि में पकड़े गए थे, बादशाह के सम्मुख ले गया।'

अल्-बदायूनी (1540-1615), अबुल फज़ल (1551-1602) और अबुल फैजी (1547-1595) लिखते हैं कि जब बैरम ख़ान के कहने पर बादशाह अपने हाथ से हेमू को मारने के लिए राजी नहीं हुआ तो स्वयं बैरम ख़ान ने उसको मारा। बदायूनी के अनुसार बैरम ख़ान ने कहा, यह आपका प्रथम युद्ध (गजद) है, इस काफ़िर पर अपनी तलवार आजमाओ। यह बड़ा पुण्य कार्य होगा। अकबर ने उत्तर दिया, यह मरा हुआ ही है। इसमें क्या दम है ? मैं इस पर कैसे प्रहार करूँ ? यदि इसमें कुछ चेतना और शक्ति होती तो मैं अपनी तलवार आजमाता। तब सबकी विद्यमानता में बैरम ख़ान ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। हेमू का सिर काबुल और उसका धड़ दिल्ली भेजा गया और वहाँ दरवाज़ों पर लटकाया गया।'

सर विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ (Sir Vincent Arthur Smith : 1843-1920) ने लिखा है : 'हाथी सहित हेमचन्द्र को अकबर तथा बैरम ख़ान के समक्ष

1. संसार के प्रसिद्ध युद्ध, पृ० 82

2. अबुल फज़ल ने लिखा है कि अपने प्राणों के भय से हेमू के महावत ने ही अपने मालिक से विश्वासघात किया था।

—अकबरनामा, भाग 2, पृ 49

3. तबकात-ए-अकबरी, भारत का इतिहास, खण्ड 5, पृ० 206

4. अकबरनामा, खण्ड 2, पृ० 51; बदायूनी, खण्ड 2, पृ० 16; तारीख-ए-अल्फी और फैजी सरहिंदी का अकबरनामा

पेश किया गया। अकबर ने अपनी तलवार से हेमू के गले पर प्रहार किया। पास ही खड़े लोगों ने भी खून से लथपथ शव में अपनी तलवारें घोंप दीं। हेमू का कटा सिर प्रदर्शन के लिए काबुल भेजा गया तथा उसका धड़ दिल्ली के एक दरवाजे पर लटका दिया गया। यह सरकारी मनगढ़न्त कथा कि जब अकबर के संरक्षक बैरम खान ने उसे निर्देश दिया कि वह शत्रु के अर्ध-मूर्च्छित शरीर पर तलवार से प्रहार करके 'गाज़ी' की उपाधि प्राप्त करे, तो असहाय बन्दी के प्रति अकबर में कारुणिक भावना उत्पन्न हो गई, जिससे उत्प्रेरित होकर उसने हेमू के शरीर पर तलवार का वार करने से इनकार कर दिया— यह दरबारी चाटुकारों की मनगढ़न्त कहानी प्रतीत होती है।¹

दिल्ली पहुँचकर अकबर ने कत्ले-आम करवाया ताकि लोगों में भय का संचार हो और वे दोबारा विद्रोह का साहस न कर सकें। हेमचन्द्र के सैनिकों और भार्गवों के हज़ारों कटे हुए सिरों का बुर्ज बनाया गया, जैसा कि सभी पूर्ववर्ती सुल्तान करते आये थे।² इतना ही नहीं, ज़श्न-ए-फतह के लिए हेमचन्द्र का एक विशाल पुतला बनवाया गया और उसमें बारूद भरी गई और ज़बर्दस्त आतिशबाज़ी के साथ उस पुतले में आग लगाई गयी।³

इस सफलता के तुरन्त बाद ही अकबर ने आगरे को भी अपने अधिकार में

1. 'Hemu's elephant, which had fled into the jungle, was brought back by Shah Kuli Khan Mahram, and its unconscious rider was placed before the Protector and Akbar, who had ridden up. During the battle the young prince had been kept at a safe distance in the rear, and Bairam Khan had left the conduct of the fight to his lieutenants. Bairam Khan desired Akbar to earn the title of Ghazi, or Slayer of the Infidel, by fleshing his sword on the captive. The boy naturally obeyed his guardian and smote Hemu on the neck with his scimitar. The bystanders also plunged their swords into the bleeding corpse. Hemu's head was sent to Kabul to be exposed, and his trunk was gibbeted at one of the gates of Delhi. Akbar, a boy of fourteen, cannot be justly blamed for complying with the instructions of Bairam Khan, who had a right to expect obedience; nor is there any good reason for supposing that at that time the boy was more scrupulous than his officers. The official story, that a magnanimous sentiment of unwillingness to strike a helpless prisoner already half dead compelled him to refuse to obey his guardian's instructions, seems to be the late invention of courtly flatterers.'

—Akbar the great Mogul 1542-1605, p.39.

2. पानीपत संग्रहालय में इस सन्दर्भ का एक चित्र आज भी हिंदुओं की दुर्दशा के स्मारक के रूप में प्रदर्शित है।
3. सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य : 5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष (2001-2002), पृ० 18

कर लिया और अपने सेनापतियों को भेजकर हेमू की सम्पत्ति को ज़ब्त करने का आदेश दिया तथा मुग़लों का हेमचन्द्र के नगर मेवात पर भी अधिकार हो गया। इसके साथ ही बैरम खान ने हेमचन्द्र के सभी सहयोगियों का कत्लेआम करने का निश्चय किया। फलस्वरूप हेमचन्द्र के समर्थक अफगान अमीर और सामन्त या तो मारे गए या फिर दूर-दराज के ठिकानों की ओर भाग गये या उन्होंने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।⁴ बैरम खान के निर्देश पर उसके सिपहसालार नासिर-उल्ल-मुल्क मौलाना पीर मुहम्मद खान शेरवानी (मृत्यु : 1562 ई०) ने हेमचन्द्र के पिता राय पूर्णदास को बन्दी बना लिया और उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।⁵ फिर बैरम खान ने हेमचन्द्र के समस्त वंशधरों यानि सम्पूर्ण भार्गव कुल को नष्ट करने का निश्चय किया। अलवर, रेवाड़ी, नारनौल, आनौड़ आदि क्षेत्रों में बसे हुए 'दूसर वैश्य' कहलाए जानेवाले भार्गवजनों को चुन-चुनकर बन्दी बनाया गया।⁶ यह बात इतिहास में कुछ इस तरह कही जाती है—

‘साह कहीं बनियन को लाओ, मारो सबन जहाँ लगि पावो ।
आहिदी गये पकड़ सब लाये, लाय झरोखों तारे दिखाए ।
तब उजीर ने विनती किन्ही, चुक सबे दूसर सिर किन्ही ।
उन्हें छोर तब दूसर ही पकड़े, पकड़ पकड़ बेरहीन में जकड़े ।’

1. सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य : 5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष (2001-2002), पृ० 19
2. हेमचन्द्र के पिता राय पूर्णदास संत व्यक्ति थे। उन्होंने गृहस्थाश्रम छोड़कर वृन्दावन में हितहरिवंश सम्प्रदाय में दीक्षा ली थी और पूरी तरह ईश्वरोपासना में लीन थे। बैरम खान के निर्देश पर उसके सिपहसालार मौलाना पीर मुहम्मद खान ने राय पूर्णदास को बन्दी बना लिया। उस समय उनकी आयु 80 वर्ष थी। पीर मुहम्मद ने संत से धर्म-परिवर्तन या मृत्युदण्ड के लिए कहा। अबुल फजल के अनुसार, संत ने पीर मुहम्मद से स्पष्ट शब्दों में कहा कि पिछले अस्सी वर्ष तक मैंने स्वधर्मानुसार भगवान् का पूजन किया। अब अपने जीवन की सन्ध्या में, केवल मृत्यु के भय से उसे क्यों बदलूँ? मैं यह समझने में भी अपने को असमर्थ पाता हूँ कि मेरा धर्म तुम्हारे धर्म (या तुम्हारी उपासना-पद्धति) में किसी तरह बाधक है। पीर मुहम्मद ने एक मतांध व्यक्ति के रूप में संत की वाणी पर कोई ध्यान नहीं दिया और तलवार के वार से संत के टुकड़े-टुकड़े कर दिया।

—अकबरनामा, खण्ड 2, पृ० 71-72

3. सर विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ ने भी लिखा है : 'हेमू के वृद्ध पिता को मौत की सजा दी गयी।' ('...Whose aged father was executed.')
- Akbar the great Mogul 1542-1605, p.40.
4. सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य : 5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष (2001-2002), पृ० 20-21

हेमचन्द्र के बाद दूसरे वैश्य समाज के लोग हरियाणा व दिल्ली से पूर्व की ओर पलायन करने लगे और गंगा के किनारे वर्तमान कानपुर एवं उन्नाव तथा रायबरेली के बैसवारा के क्षेत्रों में बस गये।

डॉ० रमेश चन्द्र मजूमदार (1888-1980) ने लिखा है : 'युद्धक्षेत्र की एक दुर्घटना ने हेमू की सुनिश्चित विजय को पराजय में बदल दिया। सम्भवतः वह परिणाम दिल्ली में मुगल-सल्तनत की नींव का पत्थर बनने के बजाय दिल्ली (और सम्पूर्ण भारत) में हिंदू-साम्राज्य की आधारशिला के रूप में स्थापित होता।'¹

सर विन्सेन्ट आर्थर स्मिथ ने भी लिखा है : 'हेमू सम्भवतः युद्ध में जीत जाता, किन्तु एक दुर्घटना यह हुई कि एक तीर उसकी आँख में आकर घुस गया, जिसने उसके मस्तिष्क को छेद दिया तथा वह मूर्च्छित होकर गिर पड़ा। उसकी सेना तितर-बितर हो गई तथा बाद में आक्रमण करने के लिए संगठित नहीं हो सकी।'²

हेमचन्द्र विक्रमादित्य की हवेली

अफगानों और मुगलों के विरुद्ध लगातार 22 युद्धों में विजेता रहे सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य की अनमोल स्मृतियों को अपने आँचल में सहेजे उनकी 600 वर्ष पुरानी हवेली, जो कलात्मक कारीगरी का नायाब नमूना भी है, वर्तमान में जर्जर हालत में है। महाभारतकालीन नगरी रेवाड़ी के कुबुतपुर मोहल्ले में स्थित इस ढाई मंजिला हवेली की हालत दयनीय है। इतिहास की यह धरोहर समाप्त होने के कगार पर है।

हेमचन्द्र विक्रमादित्य की यह ढाई मंजिला हवेली प्राचीन कलात्मक कारीगरी का जीता-जागता उदाहरण है। कलात्मक मुख्यद्वार, नक्काशी से सजी दीवारें तथा दुर्लभ पत्थरों पर आकर्षक कारीगरी अनायास प्रभावित करती है। अन्दर प्रवेश करते ही वर्गाकार चौक स्वागत करता है। चहुँओर कलात्मक नक्काशी मन को मोह

लेती है। बरामदे व कक्ष की विशालता से कभी रही इसकी भव्यता का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। प्रथम तल पर कुल मिलाकर छोटे-बड़े एक दर्जन कक्ष एवं चार दालान हैं। एक कक्षनुमा रसोई प्रतीत होती है। इसमें दो-तीन तहखाने भी हैं, जिन्हें अब सफाई के बाद दरवाजे लगाकर बन्द कर दिया गया है। दिलचस्प पहलू यह है कि प्रथम तल पर कहीं कोई खिड़की नज़र नहीं आती, जबकि पहले इसके आगे और पीछे आँगन भी होते थे। ऐसा सम्भवतया सुरक्षा की दृष्टि से किया गया होगा। इस तीस फुट हवेली का प्रथम तल लगभग नौ सौ से एक हजार वर्ष पुराना बताया जाता है।

आंतरिक हवेली : इस ऐतिहासिक हवेली का द्वितीय तल एक विशेष प्रकार की ईंटों से बना है, जिन्हें 'लखौरी ईंटें' कहा जाता है। पाँच इंच लम्बी, साढ़े तीन इंच चौड़ी तथा डेढ़ इंच मोची ईंटों की कलात्मक चिनाई में पुर्तगाली शैली के प्रमाण विद्यमान हैं। यह जीर्णोद्धार-कार्य 1540 ई० का है। इस तल पर बने दो वर्गाकार सभागार ध्यान आकर्षित करते हैं जिनमें से एक की छत गिर चुकी है तथा दूसरा सभागार ठीक स्थिति में है। सबसे ऊपर का तल खुला है, किन्तु इसकी चारदीवारी सात-आठ फुट की सुरक्षा कवच प्रतीत होती है। हेमचन्द्र विक्रमादित्य के पिता राय पूर्णदास सन् 1516 ई० में मछेरी (अलवर) से रेवाड़ी आकर कुतुबपुर मोहल्ले में रहने लगे थे। उस समय हेमचन्द्र की आयु पन्द्रह वर्ष की थी।³

हेमचन्द्र विक्रमादित्य की वंश-परम्परा

मध्यकालीन संस्कृत-रचना *इंद्रप्रस्थप्रबन्ध* में उल्लेख है कि धूसर-जाति के 'हेमू' नामक वणिग ने 5 मास, 7 दिन योगिनीपुर (दिल्ली) पर शासन किया—

‘धूसरस्जाति वणिक् हेमूनामश्च राज्यकृत् ।

पञ्च मास दिनं सप्त योगिनीपुर मध्यगः ॥’²

सुप्रसिद्ध भारतीय इतिहासकार अगरचन्द नाहटा (1911-1983) ने उल्लेख किया है कि उन्होंने बीकानेर के अनूप संस्कृत लाइब्रेरी की दो हस्तलिखित प्रतियों में 'दिल्ली राज्यवंशावली' देखी जो संवत् 1675 के आश्विन सुदि दसमी को लिखी गई

1. 'But, for an accident in a battle which turned victory into defeat, might have founded a Hindu ruling dynasty, instead of the Mughuls, in Delhi.'

—'Himu— A Forgotten Hindu Hero', *The History and Culture of the Indian People*, Vol. VII, p.97.

2. 'Probably he would have won but for the accident that he was struck in the eye by an arrow which pierced his brain and rendered him unconscious. An Indian army never could survive the loss of its leader, on whose life its pay depended. Hemu's soldiers at once scattered in various directions and made no further attempt at resistance.'

—*Akbar the great Mogul 1542-1605*, pp.38-39.

1. 'मेरा रंग-रूप बिगड़ गया', सत्यवीर नाहड़िया, *दैनिक ट्रिब्यून*, 17 नवम्बर, 2011

2. *इंद्रप्रस्थप्रबन्ध*, 2.2, संपादक : डॉ० दशरथ शर्मा, राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर

है। उसमें लिखा है : ‘पाथशाह हेमू दूसर रेवाड़ी को मास चार दिन पन्द्रह राज्य ।’ इसी तरह की साधु आश्रम की ‘दिल्ली राज्यवंशावली’ की हस्तलिखित प्रति में भी हेमू को बनिया यानि वणिक (वैश्य) बतलाया है और उसका राज्यकाल दिया है।¹

उपर्युक्त हस्तलिखित प्राचीन वंशावलियों और अबुल फज़ल तथा मध्यकालीन तथा आधुनिक इतिहासकारों का एकमत है कि हेमचन्द्र रेवाड़ी के दूसर बनिया थे। अतः उन्हें सहसराम का रोनियार बतलाना सर्वथा गलत और भ्रमपूर्ण है। बीकानेर, जयपुर आदि के हस्तलिखित संग्रहालयों में दिल्ली-राज्यवंशावली की कई प्रतियाँ हैं, उनमें से एक में ‘राजा विक्रमादित्य ई रेवाड़ी तो वाणियो मास 4 दिन 15 घड़ी दो पाट’, दूसरे में ‘हिमू वणिक विक्रमादित्य नाम धराया । वसंत राय पाणि परवी लड़ाई पड़ी, अकबर जीत्या वणिक ना हटा’, तीसरे में ‘हमाऊ वरस एक, महीना 5, दिन 23 राज कीयो, तिहकेपार हेमू वाण्यो दूसर राज बैठो’ इत्यादि लिखा है। अर्थात् प्राचीन सभी वंशावलियाँ और ऐतिहासिक ग्रन्थ, हेमू रेवाड़ी के दूसर वणिक थे, इसी बात की समर्थक हैं।²

हेमू का नाम उन्होंने ‘हेमचन्द्र विक्रमादित्य’ दिया है, जबकि जयभिक्षु ने अपने ग्रन्थ ‘विक्रमादित्य हेमू’ में ‘हेमराज’ लिखा है। साधु आश्रम के ‘सम्यक्त्व कौमुदी’ की हस्तलिखित प्रति में भी ‘हेमराज’ नाम मिला है। इस प्रशस्ति में पतिशाह हेमराज के वंशजों का विस्तृत विवरण दिया है, यह प्रति संवत् 1726, आषाढ़ सुदी 9, रविवार को लाहौर में लिखी गयी। दिगम्बर सम्प्रदाय के काष्ठा संघ माथुर गज उसका गण के भट्टारक महिचन्द्र के शिष्य ब्रह्मसर सागर में हेमराज के वंशी हीरानन्द ने समर्पित की। इसमें हेमराज का विशेषण ‘पतिशाह’ देखकर मुझे वह हेमू ही प्रतीत होता है, यद्यपि इसमें उसकी जाति अग्रवाल, गोत्र मित्तल, तोलावंश खेरवाड़ का बताया है, जबकि अन्य उल्लेखों में दूसर मिलता है। दूसर आजकल भार्गव ब्राह्मण भी बतलाये जाते हैं पर वास्तव में हेमू ब्राह्मण नहीं, वणिक ही था। वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई से प्रकाशित पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र संकलित ‘जातिभास्कर’ के पृ० 263-264 में दूसरों के संबंध में लिखा गया है कि ‘दिल्ली और मिर्जापुर के मध्यवर्ती गंगा के निकट प्रान्त में इनका निवास है। गुड़गाँव ज़िले के

निकट रेवाड़ी नगर के ‘धोरे पूंसी’ नामक गंडशैल के नाम से यह ‘धूसरी’ व ‘धूँसी’ के नाम से प्रसिद्ध हुए, ये सब वैष्णव मतावलम्बी हैं, प्रसिद्ध हेमू वैश्य इसी वंश का था जिसने सवा लाख फौज लेकर बादशाह का मुकाबला किया और 964 में गिरफ्तार होकर मारा गया। कस्बे रेवाड़ी के साई गुड़गाँव के समीप धूँसी है, उस स्थान में च्यवन ऋषि तपस्या करते थे, दूसरू उन्हीं के वंशज हैं। उस पर्वत पर एक तालाब और मठ है और मठ के द्वार पर गऊ का एक चिह्न है। वहाँ इस जाति के लोग दर्शन को जाते हैं और सरोवर में स्नान कर दर्शन करते हैं। कार्तिक और वैशाख शुक्ल पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है।’ इससे दूसर या धूसर वैश्य ही थे, निश्चित है। प्रशस्ति में अग्रवाल होने का उल्लेख है। यह कुछ विचारणीय अवश्य है। सम्भव है कि दूसरू या अग्रवाल का कुछ पुराना एक होने का संबंध हो। दोनों वैश्य तो हैं ही। प्रशस्ति लाहौर में लिखी गई है। उसके लिए तो विचार की बात नहीं। सम्भव है कि हेमू के मारे जाने के बाद उनके वंशज लाहौर में रहने लगे हों। प्रशस्ति का प्रतिभा विशेषण ही मुझे बहुत महत्त्व का लगा। यदि वह सुप्रसिद्ध हेमू के वंशजों का ही है तो अवश्य ही अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।¹

‘सम्यक्त्वकौमुदी’ का प्रशस्ति-पत्र 78—

‘संवत् १७२६ वर्षे आसाढ़ शुदि ९ दिने रविवारे लिषत... लाहोर मध्ये । यादृशं पुस्तक दृष्ट्वा तादृशल्लिखतं मया यद शुद्ध म सुद्ध वा ममदोषो न दीयते । अथ संवत्सरे श्री विक्रमादित्य राज संवत् १७२६ वर्ष आसाढ़ शुदि ९ दिने रविवारे । श्री काष्ठासंघे माथुर गच्छे पुकर गणे भट्टारक श्री जयसेन देवा तत्पट्टे भट्टारक वारसेन देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री ब्रह्मसेन देवः तत्पट्टे भट्टारक श्री रुद्रसेन देवः तत्पट्टे भट्टारक श्री कीर्तिसेन देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जयकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अभयकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक भूतिसेन देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री भावकीर्ति देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विश्वचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री अभयचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक माधवचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री नेमचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री विनयचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री बालचन्द्र देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनचन्द्र देवा तत्पट्टे

1. ‘विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज’, सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 15

2. वही, पृ० 15

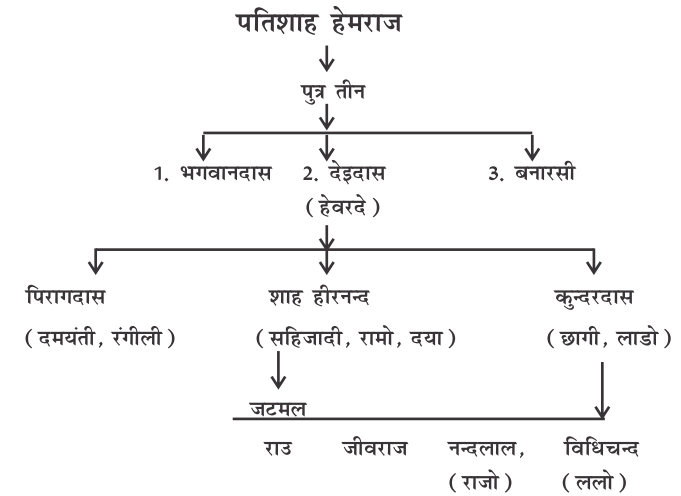
1. ‘विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज’, सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 16

भट्टारक श्री रामचन्द्र देवा तत्पट्टे भः श्री विनयचन्द्र देवा तत्पट्टे भः श्री यशकीर्ति बृहत् देवा तत्पट्टे भः श्री अभयकीर्ति देवा तत्पट्टे भः श्री महासेन देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुन्दकीर्ति देवा तत्पट्टे भः श्री भुवनचन्द्र देवा तत्पट्टे भः श्री रामशेन देवा तत्पट्टे भः श्री हरषेण देवा तत्पट्टे भः श्री गुणसेन देवा तत्पट्टे भः श्री कुमारसेन देवा तत्पट्टे भः श्री प्रतापसेन देवा तत्पट्टे भट्टारक श्री माहोसेन देवा तत्पट्टे भः श्री बिजसेन देवा तत्पट्टे भः श्री नयसेन देवा तत्पट्टे भः श्री आससेन देवा तत्पट्टे सकल विद्यानिधान संयम नियम स्वाध्याय ध्यान तत्पर सकल मुनिजन लब्धप्रतिष्ठाचार्य भः श्री हेमचन्द्र देवा तत्पट्टे वादीगजकुम्भस्थल विदारणैककवी खान निज सौम्यत्वेन निर्जि सुधा सूति मंडलान् भः श्री पद्मनन्दी देवा तत्पट्टे सकल विद्यानिधान संयम नियम स्वाध्याय ध्यान तत्परान् भः श्री यशःकीर्ति देवा तत्पट्टे पञ्चमहाव्रत पालन प्रवीण सकल विद्यानिधान संयम नियम स्वाध्याय ध्यान तत्परः सकल मुनिज लब्ध पट्टाचार्य भः श्री श्री श्री श्री त्रिभुवनकीर्ति सुर देवा तत्पट्टे भः श्री सहसकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री महीचन्द्र जी तत् शिष्य ब्रह्महर्षसागर तेन द्वदं सम्यक् कौमुदी शास्त्र शाह हीरानन्द लिखापितं ब्रह्महर्षेण समर्पिता निज ज्ञाणावरणीकरम् क्षया निमित्तं । ज्ञानवान ज्ञान दानेन, निरभयो भयदानतः । अन्दानात् सुषी नित्यं । तिर्व्वार्थी भेषजाद भवेत् ॥ १ ॥

अग्रोतकान्वये श्री लोहाचार्य आम्नाये श्री मीतनल्स्य गोत्रे टोलावंशे खडवाल पतीसाह हेमराज तस्य भार्या सीलतोयतरंगिणी विनय वणेस्वरी लटको । तस्य पुत्रत्रय प्रथम पुत्रसीलेन सुदर्शना अवतार सज्जन जन सुषकार धरमाधार पवित्र शाह भगवानदास तस्य भार्या सीलेन सीता, दानेन रेवती, रूपेण चलणा, निसाकेत द्रौपदी, हे वरदे तस्य पुत्रत्रय प्रथम पुत्र सर्व उपमायोग शाह पिरागदास तस्य भार्या दोई प्रथम भार्या दमयन्ती

द्वितीया रंगीली । भगवानदास द्वितीय पुत्र राजसभा शृंगारक सम्यक्त्व मूल स्थूल द्वादशव्रत धारक सज्जन जन सुखकारक सुप्तावक पुण्य प्रभावक जैन सभा मंडन मिथ्यात्वनय खंडन दानेन श्रेयांसावतार, पर-उपरिगण युधिष्ठिरा अवतार सर्वोपमायोग शाह हीरानन्द तस्य भार्या त्रय प्रथम भार्या सहिजादी द्वितीया भार्या रामो त्रितीय भार्या सीलताय तरंगिणी विनय वागेशरी दानेन रेवती, सीलेन सीता, रूपेण चलना, साध्वी दया । हीरानन्द प्रथम पुत्र चिरंजीवी जटमल्ल तस्य भार्या धागी (?) द्वितीया भार्या लाडो । कुन्दनदास प्रथम पुत्र नन्दलाल तस्य भार्या राजो । कुन्दनदास द्वितीय पुत्र विधिचन्द्र तस्य भार्या ललो । तृतीय जीवराज । हेमराज द्वितीय पुत्र देइदास तृतीय पुत्र बनारसी । शाह हीरानन्द सम्यक्त्व कौमुदी शास्त्र लिषावत निज-ज्ञानावरणी करम क्षया निमित्तं । लिखितं श्री लाभपुर मध्ये श्री रस्तु श्री ।'¹

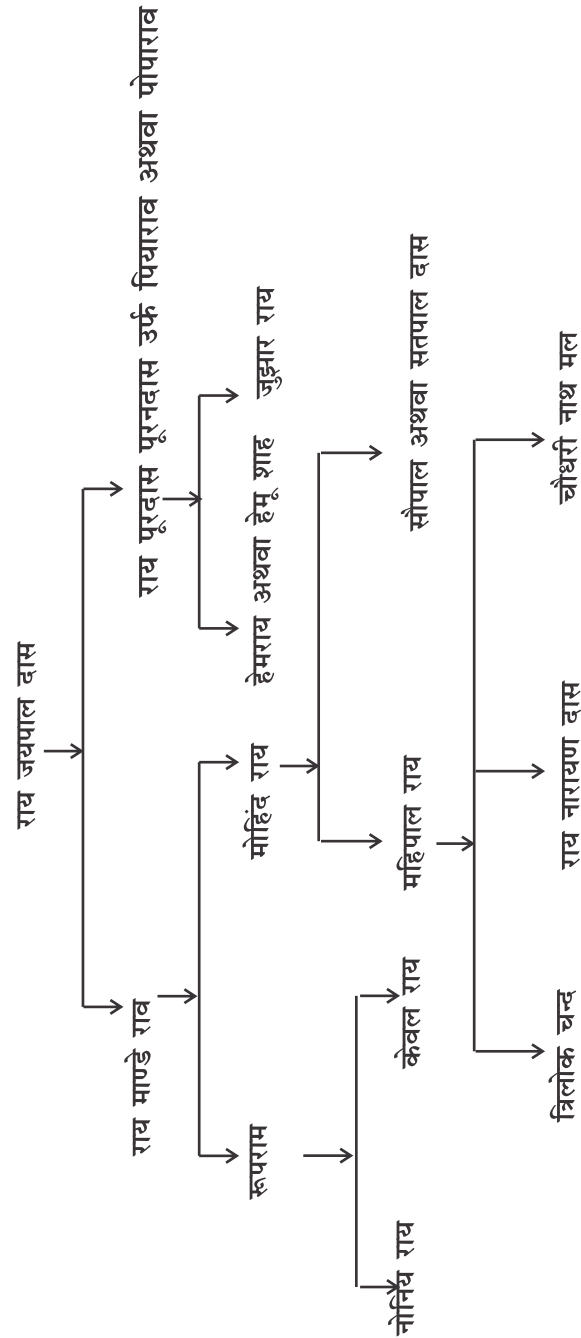
यदि उपर्युक्त प्रशस्ति के 'हेमराज', सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य ही हैं, जैसा कि उनके नाम से पूर्व 'पतिशाह' विशेषण से ज्ञात होता है, तो उनके वंशज संवत् 1726 (1669 ई०) तक तो निश्चित रूप से लाहौर में विद्यमान थे । प्रशस्ति के अनुसार सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य का वंशवृक्ष इस प्रकार बनता है—²



1. 'विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज', सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 16-17

2. वही, पृ० 17

हेमचन्द्र की वंशावली



उपर्युक्त वंशावली साधु धर्म मित्र द्वारा इकाशित 'हेमू वीर' तथा रिवाड़ी-निवासी हेमचन्द्र के वंशजों द्वारा इकाशित है— हेमू और उनका युग, मोतीलाल भार्गव, पृ० 15

अगरचन्द्र नाहटा ने लिखा है : 'जैन-भण्डारों में विशेष खोज करने पर सम्भव है कोई और भी प्रशस्ति मिल जाए, तथा जिस भट्टारक-परम्परा के वह अनुयायी थे, उसकी पट्टावली प्राप्त होने पर कुछ महत्वपूर्ण बातों का पता चल सकता है। अभी तक इस्लामी तवारीखों के आधार पर ही उस समय का इतिहास लिखा गया है और उन्होंने इस्लाम का पक्ष लेकर भारतीय इतिहास के बहुत-से उज्ज्वल पक्ष को विकृत रूप में प्रस्तुत किया या उनका उल्लेख ही नहीं किया है।'⁵⁴

डॉ० रमेश चन्द्र मजूमदार ने लिखा है : 'मध्यकालीन और आधुनिक इतिहासकारों ने हेमू के प्रति न्याय नहीं किया और उस विलक्षण प्रतिभावान हिंदू-शासक और प्रखर व्यक्तित्व का उचित मूल्यांकन करने में असफल रहे।'⁵⁵

विनायक दामोदर सावरकर ने लिखा है : 'मुस्लिम-इतिहास में इस हिंदू वीर पुरुष के विषय में अत्यन्त अल्प-स्वल्प और कामचलाऊ विवरण मिलता है, जो उसके पूर्व और पश्चात्कालीन जीवन से सम्बद्ध है। उन दिनों हेमू का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करनेवाला हिंदू-इतिहासकार होना अति कठिन था। बाद में, जो हुए उन्होंने भी उसके विषय में स्वतन्त्र रूप से कुछ भी नहीं लिखा।'⁵⁶

डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल ने लिखा है : 'यहाँ पर क्षणिक रुककर यह विचारणीय अवश्य है कि हेमू की इस महान् राष्ट्रभक्ति तथा सफलता को यूरोपीय-इतिहासकारों, विशेषकर निष्पक्षता की दुहाई देनेवाले ब्रिटिश प्रशासक-इतिहासकारों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए हेमू के अदम्य उत्साह तथा साहस की प्रशंसा क्यों नहीं की तथा अकबर, जो स्वयं विदेशी था, उसकी वकालत क्यों की ? वस्तुतः यह हेमू का न्यायोचित अधिकार था तथा सर्वोत्कृष्ट कर्तव्य भी। सत्य तो यह है कि स्वयं ब्रिटिश भी घुसपैठिये थे। इसलिए वे जान-बूझकर चुप रहे। अतः संक्षेप में कोई निष्पक्ष व्यक्ति इसके लिए हेमू की प्रशंसा तथा अद्भुत साहस की सराहना किए बिना नहीं रह सकता। यह तो हेमू के गौरवमय राष्ट्रीय चरित्र का

54. 'विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज', *सरस्वती*, जनवरी, 1957, पृ० 17

55. 'Historians, medieval and modern, have done sent justice to, and failed to show due appreciation of, the unique personality and greatness of a Hindu who...'

—Himu— A Forgotten Hindu Hero', *The History and Culture of the Indian People*, Vol. VII, p.97.

56. *भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ*, खण्ड 3, पृ० 120

उज्ज्वल प्रमाण है।'¹

अगरचन्द्र नाहटा ने लिखा है : 'सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य ने चाहे एक महीने या चार महीने ही राज किया हो, पर शताब्दियों के इस्लामी साम्राज्य के बीच उसके जितना प्रभावशाली व्यक्तित्व अवश्य ही भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। संयोगवश उनकी आँख में तीर लग जाने से अकबर का राज्य हो गया, पर हेमचन्द्र की महत्वाकांक्षा की अवश्य ही दाद देनी पड़ेगी। भारतीय इतिहास का वह उज्ज्वल नक्षत्र था। उसके संबंध में अधिकाधिक जानकारी प्राप्त करना प्रत्येक देशवासी और इतिहासप्रेमी का कर्तव्य हो जाता है।'²



1. राष्ट्रीय चेतना के प्रकाश में भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप, पृ० 113
2. 'विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज', सरस्वती, जनवरी, 1957, पृ० 17

परिशिष्ट दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) के हिंदू-शासक 736-1556 ई०

तोमर वंश

क्रम	नाम	शासनकाल	वर्ष	मास	दिवस
1.	अनंगपाल तोमर I	736-754	18	0	0
2.	वासुदेव तोमर	754-773	19	1	18
3.	गांगेय (गंगदेव) तोमर	773-794	21	3	28
4.	पृथिवीपाल (पृथिवीमल्ल) तोमर	794-814	19	6	19
5.	जयदेव (जगदेव) तोमर	814-834	20	7	28
6.	नरपाल तोमर	834-849	14	4	9
7.	उदयसिंह (उदयराय, उदयराज) तोमर	849-875	26	7	11
8.	विजयपाल तोमर	875-897	21	2	13
9.	वाछलदेव (भीखा) तोमर	897-919	22	3	16
10.	ऋक्षपाल (रघुपाल) तोमर	919-940	21	6	5
11.	सुखपाल (विहंगपाल) तोमर	940-961	20	4	4
12.	गोपाल तोमर	961-979	18	3	15
13.	सुलक्षणपाल तोमर	979-1005	25	10	10
14.	जयपाल तोमर	1005-1021	16	4	3
15.	कुँवरपाल (कुमारपाल) तोमर	1021-1051	29	9	18
16.	अनंगपाल तोमर II	1051-1081	29	6	18
17.	विजयपाल (विजशाह, तेजपाल) तोमर	1081-1105	24	1	6
18.	महीपाल तोमर	1105-1130	25	2	23
19.	अनंगपाल (अर्कपाल, अक्षपाल) तोमर III	1130-1151	21	2	15
20.	मदनपाल तोमर	1151-1152			

चौहान वंश

क्रम	नाम	शासनकाल	वर्ष	मास	दिवस
21.	पृथिवीराज चौहान I	1150-?			
22.	जगदेव	?-1152			
23.	विग्रहराज	1152-1163			
24.	अपर गांगेय	1163-?			
25.	पृथिवीराज चौहान II	?-?			
26.	सोमदेव	?-1179			
27.	पृथिवीराज चौहान III	1179-1192			

खिलजी वंश

28.	नासिर-उद्-दीन खुसरो खान बरवारी	1320-1320	0	4	
-----	--------------------------------	-----------	---	---	--

भार्गव वंश

29.	हेमचन्द्र विक्रमादित्य	1556-1556	0	0	29
-----	------------------------	-----------	---	---	----



आधार-ग्रन्थ-सूची

(महाराजा हेमचन्द्र विक्रमादित्य पर कुछ प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत-सामग्री)

फ़ारसी आधार-ग्रन्थ :

अकबरनामा, लेखक : अबुल फज़ल-ए-मुबारक अल्लामी (2 खण्ड), संपादक : मौलवी अब्दुरहीम, प्रकाशक : एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, 1877, 1876
आइन-ए-अकबरी, लेखक : अबुल फज़ल-ए-मुबारक अल्लामी (2 खण्ड), संपादक : एच० ब्रौचमैन, प्रकाशक : एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, 1872

संस्कृत आधार-ग्रन्थ :

इंद्रप्रस्थप्रबन्ध, संपादक : डॉ० दशरथ शर्मा, प्रकाशक : राजस्थान ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर

English Texts :

A Brief Biography of Hem Chandra—Hemu, by Vidya Sagar Suri, Published by Punjabi University, NH 64, Urban Estate Phase II, Patiala-147 002 (Punjab), 46 pp.
A history of India, by J.C. Powell-Price, Published by : UK Thomas Nelson and Sons Ltd., London, 1955, p. 244.
Akbar the great Mogul 1542-1605, by Sir Vincent Arthur Smith, Published by Oxford, London, 1917, 560 pp.
Akbar the great : Political History 1542-1605, by Ashirvadi Lal Srivastav, Published by Shiv Lal Agarwala, Agra, 1973
Encyclopaedia Indica : Akbar and Hemu, Vol. 52, Published by Anmol Publications Pvt. Ltd., 4360/4 Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-100 02, 1999, 336 pp.
Haryana: Studies in History and Culture, by Kripal Chandra Yadav, Published by Kurukshetra University, Kurukshetra, 1968

Hemu, edited by Isidoros Krastyo Morpheus, Published by Util publishing, 2012, ISBN 6136388820, 9786136388823, 100 pp.

Hemu : A Critical Study of the Man and His Work, by Ram Kanwar Bhardwaj, Published by Rohtak Co-operative Pub. Society, 1975, 117 pp.

Hemu and his times: Afghans vs. Mughals, by Motilala Bhargava, Published by Reliance Pub. House, 1991 (1st published 1961), ISBN 8185047936, 9788185047935, 179 pp.

Hemu : Life and Times of Hemchandra Vikramaditya, by R.K. Bhardwaj, Published by Hope India Publications, 85 Sector 23, Gurgaon-122 017 (Haryana); 2004, ISBN : 81-7871-023-4

Hemu : Napoleon of Medieval India, by Kanwal Kishore Bhardwaj, Published by Mittal Publications, 4594/9 Daryaganj, New Delhi-110 002, 2000, ISBN 8170996635, 9788170996637

Hemu Veer and Mahatma Naval Das by Sadhu Kishori Sharan of Jaipur, published by Naval Kishore Press, Lucknow; 1922

Hemu : Webster's Timeline History, 1556 - 2004, Published by ICON Group International, ISBN 0546469426, 9780546469424.

Himu : the Hindu "Hero" of Medieval India: Against the Background of Afghan-Mughal Conflicts, by Sunil Kumar Sarker, Published by Atlantic Publishers & Dist, B-2 Vishal Enclave, New Delhi-110 027; 1994, ISBN : 8171564836, 9788171564835

Military history of India, by Sir Jadunath Sarkar, Published by M.C. Sarkar, Calcutta, 1960, 179 pp.

Rise and Fall of the Mughal Empire, by Ram Prasad Tripathi, Published by Central Book Depot, 1985, 528 pp.

Studies in medieval Indian history, by Kishori Sharan Lal, Published by Ranjit Printers & Publishers, 1966, 259 pp.

Sher Shah and his times, by Kalika Ranjan Qanungo, Published by Orient Longmans, 1965, 459 pp.

Tarikh-i-khan jahani wa makhzan-i-Afghani : A complete history of the Afghans in Indo-Pak sub-continent, edited on the basis of its earliest and six other manuscripts accompanied with a critical introduction in English, annotations, geographical and historical notes in Persian, by Ni mat Allāh; Muh ammad Imām al-Dīn, Published by Asiatic Society of Pakistan, Dacca, 1960

The Emperor Akbar: A Contribution Towards the History of India in the 16th Century, Volume 2, Primary Source Edition, by Friedrich Christian Charles August, Published by Biblio Life, 2013, ISBN : 9781295295289, 466 pp.

The Empire of the great Mogul, by Joannes De Laet, Published by Oriental Books, Reprint, 1974, 252 pp.

The Successors of Sher Shah, by Nirod Bhushan Roy, Published by S.

A. Gunny, Dacca, 1934

हिंदी एवं गुजराती आधार-ग्रन्थ :

अकबर, लेखक : राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक : किताब महल, इलाहाबाद, 1967

अकबरी दरबार, खण्ड 1, लेखक : मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, अनुवादक : रामचन्द्र वर्मा, काशी

गुमनाम विक्रमादित्य (खण्डकाव्य), कवि प्रेम 'निर्मल', प्रकाशक : असीम प्रकाशन, 167, मालीवाड़ा, गाज़ियाबाद (उत्तरप्रदेश); आई०एस०बी०एन० : 978-81-922655-1-3

दिल्ली के तोमर (736-1193 ई०), लेखक : श्री हरिहरनिवास द्विवेदी, प्रकाशक : विद्या मन्दिर प्रकाशन, ग्वालियर, 1973

दिल्लीश्वर : विक्रमादित्य हेमू अने भाग्यनिर्माण ना अनुसन्धानमा आगला वगहती नवल (गुजराती उपन्यास), जय भिक्खू, प्रकाशक : गुर्जर ग्रन्थमाला कार्यालय, 1951

दो सन्त, दो सम्राट् : सन्त पूरणदास, सन्त नवलदास, सम्राट् हेमचन्द्र, सम्राट् अकबर, मोतीलाल भार्गव, प्रकाशक : साहित्य संगम, 1989

पानीपत (ऐतिहासिक उपन्यास), लेखक : विश्वास पाटील, प्रकाशक : भारतीय ज्ञानपीठ, 1991

भारत का इतिहास, खण्ड 5, इलियट एण्ड डाउसन, अनुवादक : डॉ० मथुरालाल शर्मा, प्रकाशक : शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं०, आगरा, 1969

राष्ट्रीय गौरव सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य, परशुराम गुप्त, गोरखपुर

सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य (5वाँ जन्मशताब्दी वर्ष : 2001-2002), संपादक : विजय नारायण, मनमोहन कुमार, ओमप्रकाश, राजकमल एवं भारत रत्न; प्रकाशक : सम्राट् हेमचन्द्र विक्रमादित्य दूसर (भार्गव) मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि०), गुड़गाँव (हरियाणा)

हेमचन्द्र विक्रमादित्य (ऐतिहासिक उपन्यास), डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद, प्रकाशक : सत्साहित्य प्रकाशन, 1989

हेमू (अमर चित्र कथा), (कई भाषाओं में), संपादक : अनन्त पै, प्रकाशक : डायमण्ड पॉकेट बुक्स, दिल्ली

हेमू और उनका युग (शोध-ग्रन्थ), मोतीलाल भार्गव, लखनऊ, 1960 ई०

हेमू वीर, साधु किशोरी शरण एवं धरम मित्र, जयपुर, 1924

लेख एवं शोध-निबन्ध :

'Himu— A Forgotten Hindu Hero', Published in *The History and Culture of the Indian People*, Vol. VII, by Dr. Ramesh Chandra Majumdar, Published by Bharatiya Vidya Bhavan, Bombay, 1984

"The death of Hemu in 1556 after the battle of Panipat", Published in *The Journal of Royal Asiatic Society*, London, Vol. 48, Issue no. 3, 1916

‘अन्तिम विक्रमादित्य’, कमलनारायण झा, *अवन्तिका*, सितम्बर-अक्टूबर, 1956

‘जर्जर हो गई है सम्राट् हेमू की हवेली’, अजीत बाला जोशी, *नवभारत टाइम्स*, 01 अप्रैल, 2011

‘मेरा रंग-रूप बिगड़ गया’, सत्यवीर नाहड़िया, *दैनिक ट्रिब्यून*, 17 नवम्बर, 2011

‘विक्रमादित्य हेमू और उनके वंशज’, अगरचन्द नाहटा, *सरस्वती*, जनवरी, 1957, पृ० 13-17

‘विक्रमादित्यों की परम्परा’, *भारतीय समाज का ऐतिहासिक विश्लेषण*, भगवतशरण उपाध्याय, प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, 2009, पृ० 144-155

‘हिंदू विक्रमादित्य हेमू’, *‘भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ’*, खण्ड-3, विनायक दामोदर सावरकर, प्रकाशक : लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, पृ० 119-123

‘हेमचन्द्र विक्रमादित्य’, राहुल सांकृत्यायन, *सरस्वती*, मई, 1956 ई०, पृ० 309-313

‘हेमू की राष्ट्रभक्ति और सम्राट् अकबर’, डॉ० सतीश चन्द्र मित्तल, *‘राष्ट्रीय चैतन्य के प्रकाश में भारत में राष्ट्रीयता का स्वरूप’*, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नयी दिल्ली, 2013, पृ० 111-114

